कठोपनिषद् का सार

कठोपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद की कठ शाखा के अंतर्गत आता है। शाखा डीएस नाम के आधार पर इस उपनिषद् का नाम भी कठोपनिषद् पड़ गया। कठोपनिषद् का दूसरा नाम 'नचिकेतोपाख्यान' अथवा 'नाचिकेतस उपाख्यान' भी है।

वस्तुतः सभी उपनिषद् प्रायः आरण्यक ग्रन्थों के ही विशिष्ट अंग हैं। सायण के अनुसार अरण्य में पाठ्य होने के कारण इन ग्रंथो के मनन का स्थान अरण्य का एकांत, शांत वातावरण ही उपयुक्त था। आरण्यकों का मुख्य विषय यज्ञ और यागों के भीतर विद्यमान आध्यात्मिक तत्त्वों की मीमांसा करना है। वेद के मंत्रों में इन तथ्यों का स्पष्ट संकेत उपलब्ध होता है। आरण्यकों में इन्हीं बीजों का अथवा बीजभूत तथ्यों का विस्तार से वर्णन किया गया है। अतः उपनिषद् विशेषरूप से आरण्यकों के भाग माने जाते हैं और उनमें भी इन्हीं आध्यात्मिक विषयों का विस्तार से वर्णन किया गया है जिनका सूक्ष्म संकेत हमें वैदिक संहिताओं में प्राप्त होता है।

कठोपनिषद् के अध्ययन से भी उपरयुक्त बात की पुष्टि होती है। इस उपनिषद् में भी महान अध्यात्म-तत्त्व का गंभीर विश्लेषण किया गया है। इसमें दो अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ हैं। तैत्तिरीय आरण्यक में संकेत रूप में विद्यमान नचिकेता की उपदेशप्रद कथा से उनका प्रारम्भ होता है। नचिकेता के विशेष एवं बारंबार आग्रह करने पर यमाचार्य उसे अध्यात्म-तत्त्व का मार्मिक तथा हृदयंगम उपदेश देते हैं।

सांसारिक आवागमन एवं जन्म-मृत्यु के बंधन से छुटकारा प्राप्त कर लेना ही मानव जीवन का लक्ष्य है और यह तभी संभव है जबकि मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान ले। इसके निमित्त आत्म-ज्ञान अथवा ब्रह्म-ज्ञान रूपी साधन का आश्रय प्र्‌प्त

करना परमावश्यक है, क्योंकि साधन के द्वारा ही साध्य की प्राप्ति किया जाना संभव है।

उपर्युक्त लक्ष्य को दूसरे शब्दों में इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है कि त्रिविध तापों अथवा दुःखों से पूर्ण रूप से छुटकारा प्राप्त कर लेना ही मानव जीवन का प्रधान उद्देश्य है। ये त्रिविध ताप हैं- आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। इन त्रिविध तापों में ही संसार के समस्त कष्टों का समावेश हो जाता है। इन तीन प्रकार के तापों के अभाव की स्थिति को ही मोक्ष, परम पद, मुक्ति, परम धाम आदि शब्दों से व्यक्त किया जाता है।

सांसारिक भोग और वासनाओं के द्वारा प्राप्त सुख क्षणिक होता है। आनंदलोक में प्राप्त होने वाला आनंद स्थायी होता है। सांसारिक सुखों में लिप्त जीव बार-बार यमराज के पास पहुँचते हैं –

न साम्पराय: प्रतिभासि बालं प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम्।

अयं लोको नास्ति पर इति मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे ॥1.2.6॥

श्रेय मार्ग का पथिक सांसारिक भोग और वासनाओं का त्याग कर देता है और जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है। वह जन्म-मरण की अनंत शृंखला को पार कर परम पड़ अर्थात् मोक्ष को प्राप्त होता है।

कठोपनिषद् में नचिकेता और यमराज के संवाद के माध्यम से इन्हीं सत्यों को उद्घाटित किया गया है।